Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# इतिहास की सामग्री

**डॉ. मधु वालिया***

* प्राचार्य, अमरनाथ भगत जयराम कन्या महाविद्यालय, सेरधा, जिला कैथल (हरियाणा) भारत

**शोध सारांश –** मानव की विगत विशिष्ट घटनाओं का ही दूसरा नाम इतिहास है। अतीत की सभी राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकास एंव परिर्वतन, भौतिक तथा अध्यात्मिक उत्थान एवं पुनरुत्थान वर्तमान का इतिहास बनकर प्राचीन मानव एंव उसके कृत्यों की स्मृति दिला रहे है। वैज्ञानिक ऐतिहासिक ग्रन्थों के अभाव के बावजूद अधिकांश प्राचीन भारतीय साहित्य में बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्रियां अन्तर्निहित है। भारत के इतिहास को साहित्यिक, पुरातात्विक और विदेशी विवरण के द्वारा जान सकते है।

**प्रस्तावना –** प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए विशुद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थों का अभाव है। प्राचीन भारत के मनीषियों ने इतिहास लेखन की और कोई ध्यान नही दिया। भारतीय संस्कृति का एक गंभीर दोष भारतीयों में इतिहास–लेखन के प्रति अरुचि की भावना है। यही कारण है कि हम अपनी संस्कृति की विवके पूर्ण व्याख्या नहीं कर पातें। प्राचीन यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस की हिस्टोरिका और रोमन इतिहासकार लिवी की एनल्स की भाँति प्राचीन भारत में कोई इतिहासकार या ऐतिहासिक ग्रन्थ प्राप्त नही है। परन्तु इसी आधार पर यह कह देना कि भारत का अतीत स्मरणीय घटनाओं से शून्य था सर्वथा भ्रन्तिमूलक होगा। वस्तुत वैज्ञानिक ऐतिहासिक ग्रन्थों के अभाव के बावजूद अधिकांश प्राचीन साहित्य में बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्रीयां अर्न्तनिहित है। पुराणों में चार युगों–सतयुग, त्रेता, द्धापर एंव कलियुग , प्रत्येक युग का अपना महत्व था। क्योंकि प्रत्येक युग में मानवीय मूल्यों और सामाजिक संस्थानों में परिवर्तन हुए है। काल विचार (Idea of Time) जो इतिहास का एक अन्य प्रमुख तत्व है। इससे भी भारतीय परिचित थे इस बात की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है। जैसे 58 ई0 पू0 में विक्रम संवत 78 ई0 में शक संवत एंव 31वी ई0 में गुप्त युग का आगमन हुआ। अभिलेखों में धटनाओं का उल्लेख काल, पुराण और आत्मकथाओं में तो घटना के कारणों और परिणामों पर भी प्रकाश डाला गया है।

**1. प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन स्त्रोत –** भारतीय इतिहास के साधनों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। साहित्यिक, पुरातातविक और विदेशी विवरण।

**साहित्यक सामग्री –** साहित्यक सामग्री में धार्मिक साहित्य और इहलोक परक साहित्य का वर्णन है।

**1. धार्मिक साहित्य–**धार्मिक साहित्य भी दो प्रकार का है।

**क. ब्रहामण ग्रन्थं ख. अब्राहमण ग्रन्थं (बोद्ध और जैन ग्रन्थं)**

ब्रहामण ग्रन्थों को भी श्रुति तथा स्मृति दो भागों में विभाजित किया गया है। श्रुति के अर्न्तगत चारों वेद, ब्रहामण ग्रन्थों तथा उपनिषदों की गणना की जाती है और स्मृतियों में दो महाकाव्य (रामायण एंव महाभारत) पुराण तथा स्मृतियाँ आती है।

**2. इहलोकिक साहित्य–** यह साहित्य पांच प्रकार का है।

1. **ऐतिहासिक**
2. **अर्ध–ऐताहिसक**
3. **विदेशी विवरण**
4. **जीवनियां**
5. **कल्पना प्रधान एंव गल्प साहित्य (विशुद्ध साहित्य)**

**2. इतिहास की सामग्री का प्रयोग (साहित्यक)**

वैदिक युग से लेकर मध्यकाल तक दो तरह के साहित्य की रचना की गई है।

**धार्मिक साहित्य एंव धर्मनिरपेक्ष साहित्य –** धार्मिक साहित्य के अर्न्तगत ब्राहमण साहित्य है। इसमें पूर्ववैदिक युग से लेकर उतर प्राचीन काल तक हिन्दू धर्म और समाज से सम्बन्धित अनेक साहत्यिक ग्रन्थ लिखे गये। इनकी रचना ब्राहमणों ने की थी। इसलिए इसे ब्रहामण साहित्य कहा गया।

**वेद:– वेद चार है। ऋग्वेद , सामवेद, यर्जुवेद एवं अर्थववेद।** यह प्राचीनतम वेद ऋगवेद है। सामवेद:– इसे यज्ञ के अवसर पर उपयोग किया जाता है। सामवेद गान प्रधान है। अर्थववेद में मोहन, मारण, उच्चाटन, विवाह और श्राद्ध का उल्लेख है। ब्रहामण – पध् में रचित सारे ग्रंथ वेदों की टीका टिप्पणी करते है। आरण्यक में यज्ञ के अतिरिक्त चिन्तन को महव दिया गया है। उपनिषदों में दार्शनिक , प्रश्नों, ईश्वर, आत्मा आदि समस्याओं पर विचार किया गया है। वैदांग छह है। वेद की व्याख्या और भाष्य के लिए वेदागों का ज्ञान अपरिहार्य है। महाकाव्य– प्राचीन सामाजिक व्यवस्थाओं और धार्मिक अनुष्ठानों के स्त्रोत महाकाव्य है। पुराणों में सामाजिक, धार्मिक जीवन की छवि मिलती है। बौद्ध साहित्य–महात्मा बुद्ध के विचार और वचनों का सग्रह है, जैन साहित्य में जैन आणम सर्वोपरि है।

**पुरातात्विक साहित्य–** प्राचीन भारतीय इतिहास की संरचना में पुरातात्विक साहित्य एक महत्व पूर्ण भाग है। प्रागैतिहासिक काल का सारा ज्ञान इसी पर आधारित है। इसके अर्न्तगत उत्खनित सामग्री, अभिलेख, सिक्के, स्मारक इसका प्रयोंग पुरातात्विक काल में किया गया। गंगा घाटी में उत्खन्न से जो

पुरावशेष प्राप्त हुए है। उनसे वहां की भागौलिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। उत्खन्न सम्बन्धी कार्य सरकार के पुरातत्व विभाग के तत्वाधान में होता है। अभिलेखों के द्वारा प्राचीन भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। सिक्कों के द्वारा काल निर्धारण, राजाओं के राज्य विस्तार, उनकी कृतियों एंव वशांवली के बारे में जानकारी मिलती है तथा स्मारक से मन्दिर, स्तूप और विहार से तत्कालीन धार्मिक विश्वासों पर प्रकाश पड़ता है। मूर्तियों, भित्ति चित्रों से भी भारतीय इतिहास के अध्ययन में सहायता मिलती है।

**इहलोंक परक साहित्य :**

**क. ऐतिहासिक ग्रन्थ –** इतिहास का क्षेत्र अध्याधिक विस्तृत है। उसका तात्पर्य है। राजाओं तथा उनके शासन प्रबन्ध से है। इन पर प्रकाश डालने वाले ग्रन्थों से है। प्रकाश डालने वाले ग्रन्थो में राजतरागिनी, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कामन्दकीय नीतिसार, बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र है।

**ख. अर्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ –** इस वर्ग में जिन ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है। इनमें पणिनी की अष्टाध्यायी, मार्ग संहिता, पतंजलि का महाकाव्य, कालिदास का मालविकागिन मित्रम तथा विशाखदत का मुद्रा राक्षस विशेष महत्वपूर्ण है।

**विदेशी विवरण –** इसके अर्न्तगत हम इस साहित्य पर इसलिए बल देते है कि उनमें से कुछ तो राजदूत के रुप में भी आये जो प्राय: उत्तरदायित्व पूर्ण है। इसमें यूनानी, चीनी, तिब्बती, अरबी इतिहासकारों ने इनकी जानकारीयां दी है।

**इतिहास की सामग्री प्रयोग –** हमारा इतिहास बहुत ही पुराना है। यह ठीक है कि प्राचीन भारतीयों का इतिहास लेखन की जानकारी नही थी किन्तु इसी आधार पर यह कह देना गलत होगा कि भारत की ऐतिहासिक घटनाओं से शून्य था। उदाहरण स्वरुप कल्हण ने राजंतरगिणी में कश्मीर का इतिहास लिखा। प्राचीन भारत का इतिहास जानने के लिए तिथि निर्धारण की कठिनाई थी। इससे तिथियों की जानकारी मिलती है। सभ्यता और समय का उपयोग किया जाता है। पुरातात्विक सामग्री का उपायेग भारत के रहस्यो और जटिलताओं के बारे में जानकारी मिलती है। इन स्त्रोतों में उत्खन्न स्थल, शिलालेख, सिक्के, कलाकृतियॉ, मूर्तिया, गुफा, चित्र और प्राकृतिक अवशेषों का उपायेग भी शामिल है।

**प्राचीन भारतीय इतिहास सामग्री का महत्व–** यह इतिहास हमें बताता है कि भारत में लोगों ने अपनी पहली सम्यताएं कैसे, कब और कहा स्थापित की। कृषि पशुपालन के साथ जीवन शैली कैसे विकसित हुई। अपने विशाल प्राचीन इतिहास को जानने से हमें याद आता है कि हम कहाँ से आए है और हम यहां क्यों है। किस प्रकार हमारे पूर्वजों ने अपने भविष्य को हमारे वर्तमान कार्यो से जोडने का प्रयास किया, अगर हमारी सभ्यता अपने अतीत को समझ नही पाती तो भविष्य में टालने के लिए क्या होगा। इतिहास के बारे में जानने से हम खुद को बेहतर समझ सकते है। इस बात पर विवाद करना असंम्भव है कि मानवता की उन्नति के लिए खुद को जानना महत्वपूर्ण है।

**निष्कर्ष –** विश्व के प्रत्येक देश में लोगों को इतिहास की समझ एक समय पर नही हुई किसी भी देश का अपना अलग इतिहास होता है। किन्तु साहित्यक सामग्री इतिहास लेखन में सहायक सिद्ध होगी। यह समझ पाना बहुत कठिन है। फिर भी हम ऐताहिसक सामग्री का प्रयोग करके अपने इतिहास को जान सकते है। लेकिन अलग–2 युगों और अलग–2 लोगों के ऐतिहासिक साहित्य की प्रकृति गुणवक्ता और मात्रा में अन्तर है। ये भिन्नतांए सामाजिक जीवन और मान्यताओं तथा इतिहास बोध की उपस्थिति या अनुपस्थिति से प्रति बंधित होती है। प्राचीन भारतीयों के बौद्धिक जीवन की सबसे बडी त्रुटि यह की कि उनकी सभ्यता का सुदीर्ध इतिहास और विकसित चरित्र होने के बाद भी उनके इतिहास बोध और विभिन्न घटनाओं को कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित करने की पवृति का पूर्णत: अभाव है। भारतीय साहित्यों में ऐताहिसक सामग्री निश्चित रुप से उपलब्ध है। परन्तु उनका प्रयोंग करने के लिए नीरक्षीर विवेकी होना अति आवश्यक है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :–**

1. Aggarwal: V.S. Indian Art. Vol.1 (1663)
2. Anderson: J.D. Peoples of India (1918)
3. Kaleshwar Rai: Prachin Barat (1206)
4. Rati Bhanu Singh:Political and Cultural History of India

**********